

Topic - सत्याग्रह

गांधीजी की सत्य और अहिंसा, साध्य और धार्यन की श्रेष्ठता तथा व्यक्ति की नैतिक पवित्रता में दृढ़ विश्वास थी और अपने इन्हीं विश्वासों के आधार पर उन्होंने ब्रह्म के प्रतिरोध के एक नवीन मार्ग का आविष्कार किया जिसे सत्याग्रह का नाम दिया गया है। सत्याग्रह की पहली गांधीजी की राजनीति की विशेष और अपूर्व दैन है। सत्याग्रह शांतिशाही और वीर मनुष्य का शास्त्र है। एक सत्याग्रही अपने प्रतिद्वंद्वी से आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित कर लेता है वह उसमें ऐसा विश्वास उत्पन्न कर देता है कि वह बिना अपने को नुकसान पहुंचाये उसका नुकसान नहीं पहुंचा सकता। सत्याग्रह सत्य की विजय हेतु किये जाने वाले आध्यात्मिक और नैतिक संघर्ष का नाम है।

सत्याग्रही के गुण :-

गांधीजी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति सत्याग्रह के सिद्धान्त पर आचरण नहीं कर सकता सत्याग्रही में कुछ विशेष गुण होने चाहिए। उनके अनुसार सत्याग्रही के लिए यह आवश्यक है कि वह सत्य पर चलने वाला ही अनुशासन में रहने का अभ्यस्त हो। सत्याग्रही कभी अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हल, कपट, झूठ, हिंसा इत्यादि का आश्रय नहीं लेता। गांधीजी ने हिन्द स्वराज्य में

सत्याग्रही के लिए ॥ पुत्रों का पालन आवश्यक बनाया है वे प्रान् निर्माणिजि हैं - अहिंसा, सत्य, अस्वैय, अहिंसा, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम, अहंवाक, निर्भयता, सभी धर्मों को समान दृष्टि से देखना, स्वदेही तथा अस्युश्चना निवारण ।

सत्याग्रह के विभिन्न रूप :-

सत्याग्रह के विभिन्न रूप निम्नांकित हैं -

- ① असहयोग आंदोलन - गांधीजी का विचार था कि किसी भी शासन द्वारा जनता के सहयोग से ही कार्य किया जाता है। ऐसे में यदि शासक जनता को शोषण करे तो जनता शासन के साथ सहयोग करने से इकार कर शासन के कार्यों को बाधित कर सकता है।
- ② सविनय अवज्ञा आंदोलन - सत्याग्रह का असहयोग से अधिक प्रभावपूर्ण रूप सविनय अवज्ञा है। गांधीजी इसे पूर्ण, प्रभावदायक और ऐनिक विद्रोह का स्वतन्त्र विकल्प कहते हैं। सविनय अवज्ञा का तात्पर्य शारीरिक और विनयपूर्वक तरीके से कानूनों की अवज्ञा करना है।
- ③ हिंजरत - सत्याग्रह का एक अन्य रूप हिंजरत है जिसका अर्थ है - स्थायी निवास-स्थान का स्वच्छिंद्य परित्याग। ऐसे व्यक्ति व जो अपने आपको पीड़ित अनुभव करते हैं, आत्मसम्मान

रखते हुए इस स्थान में नहीं रह सकते हैं और अपनी रक्षा के लिए हिसक शक्ति नहीं रखते हैं, उनके द्वारा हिजरत का प्रयोग किया जा सकता है।

(4) अनशन - गांधीजी अनशन को अत्याधिक उग्र अक्षा समझते थे और उनका विचार था कि इसे अपमान में अत्याधिक सावधानी बरनी जानी चाहिए। अनशन केवल कुछ विशेष अवसरों पर आत्मभूई या अत्याचार के हृद्य परिवर्तन के लिए ही किया जाना चाहिए।

(5) हड़ताल - गांधीजी के अनुसार हड़ताल आत्मभूई के लिए किया जाने वाला एक स्वच्छक प्रयत्न है जिसका लक्ष्य स्वयं कूट सहन करने हुए विराधी का हृद्य परिवर्तन करना है।

Rushika Kumari